जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
फरीदपुर, बरेली (उ.प्र.)

वॉल्यूम 1 • संस्करण 6
मासिक शैक्षिक बुलेटिन

डायट बुलेटिन

अक्टूबर
2026



कवर स्टोरी • पृ. 7-8

कला उत्सव 2026

दो दिन, अनेक विधाएँ – शिक्षकों की प्रतिभा से गुंजायमान हुआ प्रांगण

16-17 अक्टूबर • नृत्य, नाट्य, लोकगीत एवं कला प्रदर्शनी



राष्ट्रीय संगोष्ठी

शिक्षा में शोध और नवाचार का महत्व

पृ. 2



प्रतियोगिताएँ

पठन एवं निबंध प्रतियोगिता के विजेता

पृ. 3, 5

गुरु वाणी

“ज़फ़र सर की अनूठी सज़ा”

छात्र जीवन की वह सीख जो ज़िंदगी भर याद रही

पृ. 10

समावेशी शिक्षा

Wall of Inclusion

डिस्लेक्सिया पर जागरूकता कार्यक्रम

पृ. 5

इस अंक में भी: संपादकीय 4 TLM 12 स्पोर्ट्स 17 पाठ्य पुस्तक समीक्षा 21 अपना बरेली 25 डॉ. कलाम 28

जयंती समारोह • 2 अक्टूबर

महात्मा गांधी - लाल बहादुर शास्त्री जयंती धूमधाम से मनाई गई



डायट प्रवक्ता माल्यार्पण करते हुए

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान फरीदपुर में 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती बड़े हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। पूरे परिसर में देशभक्ति और उत्साह का माहौल रहा। उपस्थित सभी प्रवक्ताओं, कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं ने दोनों महापुरुषों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इसके बाद जयंती के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें वक्ताओं ने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, स्वच्छता और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर विस्तार से अपने विचार रखे। बताया गया कि कैसे गांधी जी ने बिना शस्त्र उठाए देश को स्वतंत्रता दिलाई। वहीं लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी सादगी, ईमानदारी और उनके दिए "जय जवान-जय किसान" के नारे को आज के युग में भी बेहद प्रासंगिक बताया गया। उन्हें सच्चे देशभक्त और जननायक के रूप में याद किया गया। इस दौरान संस्थान के प्रवक्तागण ने प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा कि एक शिक्षक के रूप में हमें इन महान विभूतियों के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को भी इसकी प्रेरणा देनी चाहिए। कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। डीएलएड 2025 और 2026 दोनों ही बैच के अनेक प्रशिक्षु आगे आए और मंच से अपने विचार व्यक्त किए। किसी ने कविता के माध्यम से तो किसी ने भाषण के माध्यम से बापू और शास्त्री जी को याद किया। उनके ओजस्वी विचारों से पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रशिक्षुओं, प्रवक्ताओं और कर्मचारियों के बीच मिष्ठान्न का वितरण किया गया। पूरा आयोजन अनुशासन, सहयोग और सौहार्द के साथ संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी • 8 अक्टूबर

डायट बरेली और बरेली कॉलेज के द्वारा 'शिक्षा में शोध और नवाचार का महत्व' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

बरेली। 8 अक्टूबर 2026 (गुरुवार) को डायट, बरेली व पर्यावरण विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली के द्वारा 'इम्पॉर्टेन्स ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन इन एजुकेशन' विषय पर डायट सभागार में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें बरेली कॉलेज के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) ओ.पी. राय, डायट प्राचार्य श्री राजेश कुमार, के.सी.एम.टी. के प्राचार्य डॉ. आर.के. सिंह, बरेली कॉलेज की उप-प्राचार्य डॉ. वंदना शर्मा, सॉफ्ट कंप्यूटिंग, न्यूरल नेटवर्क एवं शोध गतिविधियों के जानकार डॉ. सोमेश कुमार (हल्द्वानी) अपने शोधार्थियों के साथ तथा वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी राजकीय महिला महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुरभि श्रीवास्तव उपस्थित रहे। शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी, नैतिक, सामाजिक रूप से आवश्यक व बुनियादी बदलावों के विषय में प्राचार्य प्रो. ओ.पी. राय, डॉ. सोमेश कुमार, डॉ. वंदना शर्मा एवं डॉ. आर.के. सिंह ने अपने विचार रखे। डॉ. सोमेश कुमार ने शोध, आविष्कार एवं नवाचार के बीच के अंतर को स्पष्ट किया

तथा इनकी आवश्यकता भी समझाई। डॉ. सुरभि श्रीवास्तव ने बच्चों को शोध एवं नवाचार से किस प्रकार जोड़ा जाए और इसका क्या महत्व है, इस पर प्रकाश डाला। शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर डॉ. आर.के. सिंह, डॉ. सुरभि श्रीवास्तव एवं डॉ. सोमेश कुमार को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को यादगार बनाने के लिए सभी मुख्य अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए।



राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मानित प्रतिभागी एवं आयोजक





डायट सभागार में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

पठन प्रतियोगिता • 21 अक्टूबर

पठन प्रतियोगिता का आयोजन, विजेताओं के खिले चेहरे



प्रमाण पत्र प्राप्त करते छात्र-छात्राएं

बरेली। संस्थान में 21 अक्टूबर 2026 को पठन प्रतियोगिता 2026-27 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न परिषदीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की शुरुआत में छात्राओं ने मंच पर आकर पठन प्रस्तुत किया। इस दौरान बच्चों ने शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट आवाज़ और आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रस्तुति दी, जिसे देखकर उपस्थित जनसमूह ने तालियों से उनका उत्साहवर्धन किया। पठन प्रतियोगिता के मूल्यांकन हेतु निर्णायक मंडल में ग्लोबल लॉ कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर श्रीमती मोनिका त्रिपाठी के साथ राजेंद्र प्रसाद डिग्री कॉलेज, मीरगंज और राजश्री टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के प्राध्यापकों को आमंत्रित किया गया था।

निर्णायक मंडल ने प्रत्येक बच्चे के पठन का बारीकी से अवलोकन किया और उच्चारण की शुद्धता, लयबद्धता, भाव-भंगिमा तथा प्रस्तुतीकरण के आधार पर अंक प्रदान किए।

इस कार्यक्रम के दौरान जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रवक्तागण श्रीमती ममता, डॉ. फहमीना और श्री दिनेश कुमार सिंह उपस्थित रहे और व्यवस्था को संभाला।

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

डायट बुलेटिन का अक्टूबर 2026 अंक (वॉल्यूम 1, संस्करण 6) आपके हाथों में सौंपते हुए हमें हर्ष हो रहा है। अक्टूबर का महीना हमारे संस्थान के लिए गतिविधियों से भरा रहा। माह की शुरुआत गांधी-शास्त्री जयंती से हुई और 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के साथ इसका समापन हुआ। इस बीच बरेली कॉलेज के सहयोग से 'शिक्षा में शोध और नवाचार का महत्व' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, जनपद स्तरीय निबंध एवं पठन प्रतियोगिताएँ, दो दिवसीय कला उत्सव तथा डिस्लेक्सिया जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुए। इन आयोजनों में परिषदीय एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों, शिक्षकों और हमारे प्रशिक्षुओं की सक्रिय भागीदारी ने दिखाया कि सीखना कक्षा की दीवारों तक सीमित नहीं है।

'Wall of Inclusion' इस माह की एक विशेष पहल रही। डिस्लेक्सिया जैसे पठन विकारों के प्रति संवेदनशीलता भावी शिक्षकों के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी विषय की समझ। हमें विश्वास है कि हमारे प्रशिक्षु कक्षा में हर बच्चे की अलग गति और अलग ज़रूरत को पहचानेंगे।

इस अंक में प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार शिक्षण अधिगम सामग्री, निपुण आकलन के अनुभव, कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' की समीक्षा, विजयदशमी पर रचनात्मक सामग्री तथा बरेली की विरासत से जुड़े लेख शामिल हैं। 'गुरु वाणी' स्तंभ में एक प्रधानाध्यापक का संस्मरण हमें याद दिलाता है कि एक शिक्षक का एक निर्णय किसी विद्यार्थी का पूरा भविष्य बदल सकता है।

इस माह हमने अपने संस्थान की कनिष्ठ सहायक सुश्री अंशु कुमारी को खो दिया। संपादकीय मंडल उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। हम उन सभी प्रशिक्षुओं, प्रवक्ताओं और शिक्षकों के आभारी हैं जिन्होंने इस अंक के लिए रचनाएँ, समाचार और चित्र उपलब्ध कराए। आपके सुझाव और रचनाएँ ricdietbareilly@gmail.com पर सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित,
संपादक,

इस अंक में

समाचार एवं गतिविधियाँ 2-3, 5-8
संपादकीय 4
श्रद्धांजलि.....9
गुरु वाणी 10-11
शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) ...12
कविताएँ / लेख.....13-14
करेंट अफ़ेयर्स 15-16
स्पोर्ट्स 17-18
शैक्षिक सामान्य ज्ञान 19-20
पाठ्य पुस्तक समीक्षा 21-23
क्रिएटिव ज़ोन 24
अपना बरेली.....25
प्रकृति.....26
टेक फॉर टीचर्स / फोटोग्राफी.....27
विज्ञान / प्रौद्योगिकी.....28-29
बुलेटिन टीम.....30



अक्टूबर 2026: एक नज़र में

2 अक्टूबर	गांधी-शास्त्री जयंती समारोह
8 अक्टूबर	राष्ट्रीय संगोष्ठी: शिक्षा में शोध और नवाचार का महत्व (बरेली कॉलेज के सहयोग से)
15 अक्टूबर	जनपद स्तरीय निबंध प्रतियोगिता (उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक वर्ग)
16-17 अक्टूबर	दो दिवसीय कला उत्सव 2026
21 अक्टूबर	पठन प्रतियोगिता 2026-27
31 अक्टूबर	डिस्लेक्सिया जागरूकता कार्यक्रम एवं 'Wall of Inclusion' का निर्माण

निबंध प्रतियोगिता • 15 अक्टूबर

डायट में जनपद स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का भव्य आयोजन, दो वर्गों में आयोजित हुई प्रतियोगिता

बरेली। डायट परिसर में 15 अक्टूबर को उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की जनपद स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ प्रवक्ता श्री प्रेम सुख गंगवार द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। अतिथियों का स्वागत बैज लगाकर किया गया, जिसमें श्री प्रेम सुख गंगवार को सुप्रीत शर्मा द्वारा, ग्लोबल लॉ इंस्टीट्यूट बिसलपुर से पधारी संध्या देवी को खुशी द्वारा तथा श्रीमती मोनिका को कविता द्वारा बैज लगाया गया। प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की गई। दोपहर 12 बजकर 20 मिनट पर कार्यक्रम शुरू हुआ। उच्च प्राथमिक स्तर की प्रतियोगिता 12 बजकर 50 मिनट पर और माध्यमिक स्तर की प्रतियोगिता 1 बजकर 10 मिनट पर प्रारंभ हुई। दोपहर 1 बजकर 30 मिनट से 2 बजे तक भोजन अवकाश रहा। माध्यमिक वर्ग यानी कक्षा 9 से 12 के लिए पाँच विषय रखे गए थे, जिनमें आत्मनिर्भर भारत व युवाओं की भूमिका, जलवायु परिवर्तन, सोशल मीडिया, भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता और विद्यार्थी जीवन व अनुशासन शामिल थे। इस वर्ग के लिए 50 मिनट का समय दिया गया था। वहीं उच्च प्राथमिक वर्ग यानी कक्षा 6 से 8 के लिए पर्यावरण प्रदूषण कारण व निवारण, डिजिटल इंडिया वरदान या अभिशाप, मेरे सपनों का भारत, अनुशासन का छात्र जीवन में महत्व और शिक्षा जीवन की संपूर्णता हेतु आवश्यक जैसे विषय रखे गए थे। इस वर्ग के लिए 30 मिनट का समय निर्धारित था। निर्णायक मंडल द्वारा मूल्यांकन के दौरान वर्तनी, सुलेख और प्रमाणीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रतियोगिता में कुल 25 बच्चों ने प्रतिभाग किया, जिसमें उच्च प्राथमिक के 14 और माध्यमिक के 11 बच्चे शामिल थे। प्रतियोगिता की नोडल अधिकारी प्रवक्ता डॉ. रूबी और प्रवक्ता श्री श्रीकांत मिश्रा रहे। कार्यक्रम का संचालन बिलाल शेख और आदर्श शर्मा ने किया, जबकि टीम के रूप में अरबाब, शिवम, सुप्रीत शर्मा, अनुज, कविता और खुशी ने सहयोग किया। इस दौरान विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों के साथ उनके शिक्षकगण भी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के परिणाम में उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रथम स्थान नंदिनी कंपोजिट विद्यालय अनंतपुर ने, द्वितीय स्थान खुशबू कंपोजिट विद्यालय मगरासा ने और तृतीय स्थान इबादत पूर्व माध्यमिक विद्यालय बारीनगला ने प्राप्त किया। वहीं माध्यमिक स्तर पर प्रथम स्थान अल्पी आरती श्यामसुंदर कन्या इंटर कॉलेज ने, द्वितीय स्थान अंबिका यादव राजकीय इंटर कॉलेज औरंगाबाद ने और तृतीय स्थान वैभवी श्यामसुंदर कन्या इंटर कॉलेज ने प्राप्त किया।

"प्रतियोगिता में कुल 25 बच्चों ने प्रतिभाग किया, जिसमें उच्च प्राथमिक के 14 और माध्यमिक के 11 बच्चे शामिल थे।"





ट्रॉफी प्राप्त करती हुई छात्रा एवं परीक्षा की निगरानी करते प्रशिक्षु

समावेशी शिक्षा • Wall of Inclusion

डिस्लेक्सिया जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, मुख्य अतिथि डॉ. जी.ए. राही ने प्रशिक्षुओं को किया जागरूक



प्रशिक्षुओं को संबोधित करती प्रवक्ता श्रीमती सावित्री

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरेली में दिनांक 31 अक्टूबर 2026 को संस्थान के सभागार में डिस्लेक्सिया जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री प्रेम सुख गंगवार, मुख्य अतिथि डॉ. जी.ए. राही, संस्थान के प्रवक्तागण श्रीमती सावित्री, श्री दिनेश कुमार सिंह, डॉ. फहमीना एवं श्रीमती ममता ने सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। इसके पश्चात स्वागत एवं परिचय सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रशिक्षु अरबाब, अनुज, कविता एवं कृतिका

द्वारा अतिथियों, वरिष्ठ प्रवक्ता एवं प्रवक्तागण का बैज लगाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात प्रवक्ता श्रीमती सावित्री के द्वारा स्वागत उद्बोधन एवं कार्यक्रम का परिचय दिया गया। मुख्य अतिथि के द्वारा डिस्लेक्सिया विषय पर विशेष व्याख्यान दिया गया। उन्होंने बताया कि डिस्लेक्सिया कोई बीमारी नहीं है। विषय को स्पष्ट करने हेतु उन्होंने बताया कि महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन भी इससे ग्रसित थे तथा प्रसिद्ध फिल्म 'तारे ज़मीन पर' के माध्यम से इस विषय की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने कहा कि ऐसे बच्चों को भीड़ में अलग-थलग नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि उनके साथ खड़े होकर उनका सहयोग करना चाहिए। व्याख्यान के पश्चात संवाद सत्र (Question & Answer Session) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि डॉ. जी.ए. राही को स्मृति चिह्न भेंट एवं धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ।

"यह अनूठी पहल शिक्षकों में समावेशी और संवेदनशील कार्यसंस्कृति विकसित करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।"

इस कार्यक्रम के तहत समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिसर में 'Wall of Inclusion' (समावेशिता दीवार) का निर्माण किया गया है, जिसके अंतर्गत डिस्लेक्सिया (पठन अक्षमता) पर एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों में पठन विकार से ग्रस्त बच्चों की पहचान करने की क्षमता तथा उनके प्रति संवेदनशील व सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना रहा। यह अनूठी पहल शिक्षकों में समावेशी और संवेदनशील कार्यसंस्कृति विकसित करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।







'Wall of Inclusion' का निर्माण करते प्रशिक्षु



प्रशिक्षुओं द्वारा बनाई गई 'Wall of Inclusion'

कवर स्टोरी • कला उत्सव 2026

दो दिवसीय कला उत्सव 2026 का भव्य आयोजन, शिक्षकों की प्रतिभा से गुंजायमान हुआ प्रांगण

बरेली। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फ़रीदपुर, बरेली में 16 एवं 17 अक्टूबर, 2026 को दो दिवसीय कला उत्सव का भव्य तथा गरिमामय आयोजन किया गया। इस उत्सव में जनपद के विभिन्न परिषदीय एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई और अपनी बहुमुखी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। कला उत्सव के दौरान आयोजित विविध सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी टीमों ने सामाजिक चेतना, भारतीय परंपराओं एवं ज्वलंत विषयों पर आधारित अत्यंत प्रभावशाली नाटक, एकांकी (स्किट) और शास्त्रीय व लोकनृत्य प्रस्तुत किए। शिक्षकों के प्रयासों और मंच-कला ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। संस्थान परिसर में एक आकर्षक कला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गई मौलिक पेंटिंग्स, हस्तशिल्प (Craft), चित्रकला, वेस्ट-मटेरियल मॉडल एवं स्थानीय लोक-कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी में प्रतिभागी शिक्षकों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता स्पष्ट रूप से झलक रही थी। कार्यक्रम का भव्य एवं सुचारू मंच संचालन संस्थान के सम्मानित प्रवक्ता श्री कृष्ण कुमार के द्वारा किया गया। उन्होंने अपने ओजस्वी वक्तव्य एवं उत्कृष्ट संचालन से पूरे दो दिनों तक कार्यक्रम में ऊर्जा बनाए रखी। संपूर्ण कला उत्सव का सफल संयोजन एवं दिशा-निर्देशन नोडल प्रवक्ता श्रीमती आकांक्षा की देखरेख में संपन्न हुआ। विभिन्न विधाओं (दृश्य कला, प्रदर्शन कला, संगीत, नृत्य एवं नाट्य) में प्रस्तुतियाँ देने वाले प्रतिभागियों का निष्पक्ष मूल्यांकन निर्णायक मंडल द्वारा किया गया। तत्पश्चात प्रत्येक श्रेणी (Category) में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं की आधिकारिक घोषणा की गई। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।







कला उत्सव में लोकगीत प्रस्तुति (बाएँ) एवं कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक-शिक्षिकाएँ (दाएँ)

कला उत्सव झलकियाँ

16-17 अक्टूबर 2026 • कला क्राफ्ट एवं संस्कृति महोत्सव की यादगार झलकियाँ
























In the Memory of
Anshu Kumari
Junior Assistant
DIET Faridpur, Bareilly
15 July 1995 – 06 October 2026
Your warm smile, kind heart and caring nature will always be remembered. Though you are no longer with us, your presence continues to live in our hearts and in the memories you have left behind.
Fondly Remembered by
Team DIET Faridpur, Bareilly

कहानी

ज़फ़र सर की अनूठी सज़ा – छात्र जीवन की वह अमूल्य सीख जो ज़िंदगी भर याद रही

अंग्रेज़ी और उर्दू हमें ज़फ़र सर पढ़ाते थे। बड़ी-बड़ी आंखों वाले और गम्भीर व्यक्तित्व वाले ज़फ़र सर। शहर में उन दिनों एक ही जूनियर हाई स्कूल था। मेरे दोनों भाई इसी स्कूल से निकल कर हाई स्कूल तक पहुंचे थे। बड़ी बहिन आठवीं कक्षा में थीं। मैंने ज़फ़र सर के बारे में बहिन-भाइयों से चाहे जो सुन रखा हो, ज़फ़र सर ने शायद मेरे बारे में सोचने की ज़हमत भी न की होगी। वह समझते होंगे जैसी और छात्राएं हैं यह भी वैसी होगी। मैं थी भी निहायत बोदी लड़की। बात-बात पर झेंपने वाली। पाँचवीं कक्षा में वार्षिक परीक्षा होने से पहले तक कोई कारनामा न दिखा सकी। त्रैमासिक परीक्षा दी नहीं, छमाही में बीमार पड़ गई। वार्षिक परीक्षा का रिज़ल्ट आया तो धमाका हो गया। न केवल कक्षा में प्रथम रही बल्कि कई विषयों में 'A ग्रेड' हासिल किया।

नया सत्र शुरू हुआ तो सब पर मेरा बड़ा रौब था। जैसा कि मैंने कहा, मैं दब्बू, अपने आप में गुम रहने वाली लड़की थी। इसीलिए अभी तक ज़फ़र सर के बारे में बहिन-भाई के विचार से सहमत न हुई थी। ज़फ़र सर से सभी छात्र डरते थे। वह बहुत गुस्से वाले थे। जितनी ईमानदारी से पढ़ाते उतनी ही ईमानदारी से बच्चों को डांटते और मारते। छात्रों के कान मरोड़ना, स्केल से हथेली पर मारना उनका पैदायशी हक़ था। छात्राओं को कक्षा से बाहर निकाल देना ही काफ़ी समझते थे। मगर शदीद गुस्से के आलम में उन की हथेलियां भी लाल कर देते। मेरी बड़ी बहिन अक्सर कहा करतीं " मैं बड़ी होकर टीचर बनूंगी और जब ज़फ़र सर की लड़कियां मेरे क्लास में पढ़ने आएंगी तो उन्हें ख़ूब पीटूंगी।" एक दिन मुझे भी उनके विचार और तजुर्बे से सहमत होना पड़ा। मैं पाँचवीं क्लास में पीछे की डेस्क पर बैठती थी। फर्स्ट आने पर सब ने मुझे सामने की बेंच पर बैठने का हक़दार क़रार दिया। मुमताज़ और बरखा मेरी बचपन की सहेलियां थीं, मेरे साथ बैठतीं।

एक दिन अंग्रेजी का पीरियड चल रहा था। मुझे गुमान था कि मेरी अंग्रेज़ी पहले ही बहुत अच्छी है इसलिए कोई ख़ास ध्यान देने की ज़रूरत नहीं, हां मुमताज़ और बरखा की बात वही जानें। मैं उन दोनों को उस एक फ़िट लम्बी पेन्सिल की ख़ूबियाँ बताने लगी जो किसी मेडिकल कम्पनी ने दवा के नमूने के साथ मेरी डाक्टर अम्मा को दी थी, फिर यह पेन्सिल मुझे फ़र्स्ट आने पर उपहार में मिल गई थी। थोड़ी-थोड़ी देर में मैं नज़र बचाकर ज़फ़र सर को भी देख लेती। मुझे यह पता नहीं था कि जब मेरी नज़र ज़फ़र सर की तरफ़ नहीं होती तब ज़फ़र सर मुझे देख रहे होते थे। पीरियड समाप्त हुआ। अब दस मिनट का ब्रेक था। ज़फ़र सर ने हम तीनों को रोक लिया। सब लड़के-लड़कियां क्लास से चले गए तो उन्होंने मुझ से वह पेन्सिल मंगाई। हाथ में लेकर कहने लगे, " पेन्सिल तो वाक़ई ख़ूबसूरत है।

अब इस की मार देखें, कैसी है " हम तीनों की साँस ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया। ज़फ़र सर ने डांट कर हाथ आगे बढ़ाने को कहा तो सब से पहले मैंने हाथ बढ़ाया। दोनों हाथों पर पाँच-पाँच बार पेन्सिल खानी पड़ी। छात्र जीवन की यह मेरी पहली और आख़िरी मार थी। मैं उसे ज़िन्दगी भर न भूलूंगी साथ ही ज़फ़र सर भी मुझे हमेशा याद रहेंगे। इस के बाद ज़फ़र सर का हव्वा मेरे दिल में बैठ गया। उनका पीरियड शुरू होते ही मेरे होठों पर मोहर लग जाती। बरखा और मुमताज़ क़लम भी मांगतीं तो मैं उन की तरफ़ न देखती। किसी बात पर पूरी क्लास हंस पड़ती मगर मेरे भिंचे हुए होंठ ज़रा भी न खुलते। ज़फ़र सर कोई सवाल पूछते तो जवाब दे देती। जवाब न आता तो नज़रें नीची किए खड़ी रहती, यहां तक कि ज़फ़र सर को ही मुझ पर रहम आ जाता और वह मुझे बैठने के लिए कह देते। जी हां आप ज़फ़र सर को ग़लत न समझें, उन्हें रहम करना भी आता था। छठी क्लास की त्रैमासिक और छमाही परीक्षा हो चुकी थी। मेरे बहुत अच्छे नम्बर आए थे। एक होनहार छात्रा के रूप में मैं अपनी हैसियत मनवा चुकी थी। उन्हीं दिनों ऐसा कुछ हुआ जिसने मेरे भविष्य का रास्ता तय करने में मेरी मदद की। ज़फ़र सर अंग्रेज़ी और उर्दू पढ़ाते थे साथ ही लाइब्रेरी भी उनको ही संभालनी होती थी। प्रत्येक शनिवार को आख़िरी पीरियड में बच्चों की पत्रिकाएं और बच्चों की कहानी की किताबें दी जाती थीं, जिन्हें हफ़्ते भर बाद शनिवार को लौटाना पड़ता था। मेरी क्लास में आठ लड़कियां थीं। किसी को भी पढ़ने में दिलचस्पी न थी। मगर मैं शनिवार का बेचैनी से इन्तज़ार करती और सबसे

पहले लाइब्रेरी में प्रवेश कर अपनी पसंद की किताबें उठा लेती। एक दिन मैंने अपने क्लास की लड़कियों को तैयार किया कि वे सब किताबें अपने नाम पर लेकर मुझे दे दें। मैं शनिवार को उन्हें वापस कर दूंगी। लड़कियों को भला क्या उज़र हो सकता था। यह और बात थी कि ख़ाली समय में मैं उन्हें किताबों की कहानियां कुछ इस तरह सुनाती कि धीरे-धीरे दूसरे क्लासों की लड़कियां भी शौक़ से मेरी कहानियां सुनने लगीं। हमारे बीच यह ख़ामोश एग्रीमेंट पांच माह बख़ैर ओ ख़ूबी चला। मैंने न ज़फ़र सर को शिकायत का मौक़ा दिया और न सहेलियों को। चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए मेरा शनिवार को स्कूल जाना लाज़मी था।

एक शनिवार को मैं स्कूल से घर पहुंची तो देखा ख़ाला जान एक मुद्दत के बाद आई थीं। कहां की पढ़ाई और कहां का स्कूल आठ दिन पर लगाकर गुज़र गए। ख़ाला गईं तो मुझे स्कूल का ख़याल आया। अगले दिन सोमवार था। किताबें कापियां रात को ही निकाल कर रखनी होती थीं। मैंने बस्ता खोला तो मेरे हवास गुम हो गए। सभी लड़कियों की किताबें मेरे पास थीं और शनिवार गुज़र गया था।

ज़फ़र सर की सुर्ख़ आंखें मेरे तसव्वुर में आ गईं। हथेलियों में जलन होने लगी। भयभीत होकर मैं रो पड़ी। अम्मा के पास गई।

" अम्मा अब तो ज़फ़र सर बहुत मारेंगे। एक दिन एक लड़की समय पर किताब वापस नहीं करती तो सज़ा देते हैं। मेरे पास तो सब ही लड़कियों की किताबें और पत्रिकाएं हैं। " अम्मा कुछ कहतीं इस से पहले ही मैंने फ़ैसला सुना दिया, " मैं स्कूल नहीं जाऊंगी। कभी नहीं जाऊंगी। "

अम्मा ने समझाया " पगली है तू ... स्कूल नहीं जाएगी तो पढ़ेगी कैसे? तू तो कहती है मुझे बहुत पढ़ना है। और फिर उस्ताद की मार भी कोई मार होती है? "

मैंने अम्मा की बातों को पूरी तरह समझा हो या न समझा हो, मगर तमाम रात ज़फ़र सर का ख़ौफ़ मेरे सर पर तारी रहा सवेरे मैं फिर अड़ गई...

" नहीं जाऊँगी। " अम्मा ने बड़ी बहिन को बुलाकर समझाया। "तुम इस के साथ जाना। सर से माफ़ी मांग लेना। "किसी तरह रोती-धोती मैं स्कूल पहुंची। मुमताज़ और बरखा से पूछने पर पता चला कि ज़फ़र सर की पहली ही डांट में सब ने बता दिया कि सब की किताबें कहां हैं और यह सिलसिला पांच माह से चल रहा है।

बड़ी बहिन अम्मा के सामने तो हाँ-हाँ करती रहीं मगर स्कूल पहुंच कर साफ़ मुकर गईं। चपरासी बुलाने आया तो मुझे अकेले ही जाना पड़ा। डरते-डरते स्टाफ़ रूम में पहुंच कर यूं खड़ी हुई कि लगभग आधी किवाड़ की आड़ में थी।

" सामने आकर खड़ी हो। "

ज़फ़र सर की करख़्त आवाज़ आई।

मैं कुछ सामने सरक आई। किताबें जिस हाथ में थीं वह पीठ के पीछे था।

" इतनी सारी किताबें और पत्रिकाएं घर ले जाती हो। सब तुम पढ़ती हो? "

ज़फ़र सर ने पूछा।

मैंने गर्दन हिला दी।

" पढ़ने का इतना शौक़ है तुम्हें?"

ज़फ़र सर ने दूसरी बार यह सवाल दोहराया तो बड़ी मुश्किल से हलक़ से आवाज़ निकली ..... " जी "

" तुम ने मुझे बताए बिना यह काम किया है। इस की सज़ा तुम्हें ज़रूर मिलेगी। "

सज़ा....! मेरा रोम-रोम कांप गया। हथेलियों की मार ताज़ा हो गई। क़रीब था कि मैं खड़े खड़े रो देती कि ज़फ़र सर के शब्द मेरे कानों में अमृत बन कर टपके ....

" तुम्हारी सज़ा यह है कि आज से तुम जितनी चाहो उतनी किताबें घर ले जा सकती हो। ख़ुद अपने नाम पर... "

अब मैं ज़ब्त न कर सकी। दुपट्टा आंखों पर रख कर बेइख़्तियार रो पड़ी।

ज़फ़र सर उठ कर आए मेरे सर पर हाथ रखा और बोले....

" यह क्या ...?

तुम तो हर सज़ा पर रोती हो ...! " पता नहीं ज़फ़र सर को अपनी यह शागिर्द याद भी है या नहीं मगर मुझे आज भी ज़फ़र सर की सज़ा पर नाज़ है।

-मलिक मोहम्मद अतहर प्रधानाध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुडिया मुकर्रमपुर बहेड़ी (बरेली)

पदार्थ की अवस्थाएँ: हिमानी द्वारा बनाया गया TLM

पदार्थ हमारे चारों ओर उपस्थित है। प्रत्येक वस्तु किसी न किसी पदार्थ से बनी होती है। पदार्थ की मुख्यतः तीन अवस्थाएँ होती हैं– ठोस, द्रव और गैस।

1. ठोस अवस्था: ठोस पदार्थों का आकार और आयतन निश्चित होता है। इनके कण एक-दूसरे के बहुत पास होते हैं। ये आसानी से अपना आकार नहीं बदलते। उदाहरण–पत्थर, बर्फ, लकड़ी और किताब।

2. द्रव अवस्था: द्रव पदार्थों का आयतन निश्चित होता है, लेकिन आकार निश्चित नहीं होता। ये जिस बर्तन में रखे जाते हैं, उसी का आकार ले लेते हैं। इनके कण ठोस की तुलना में कुछ अधिक दूर होते हैं। उदाहरण–पानी, दूध और तेल।

3. गैसीय अवस्था: गैसों का आकार और आयतन निश्चित नहीं होता। इनके कण एक-दूसरे से दूर होते हैं और स्वतंत्र रूप से गति करते हैं। उदाहरण–हवा, ऑक्सीजन और जलवाष्प।

निष्कर्ष: तापमान में परिवर्तन से पदार्थ की अवस्था बदल सकती है। बर्फ गर्म होकर पानी और पानी गर्म होकर भाप बन जाता है।

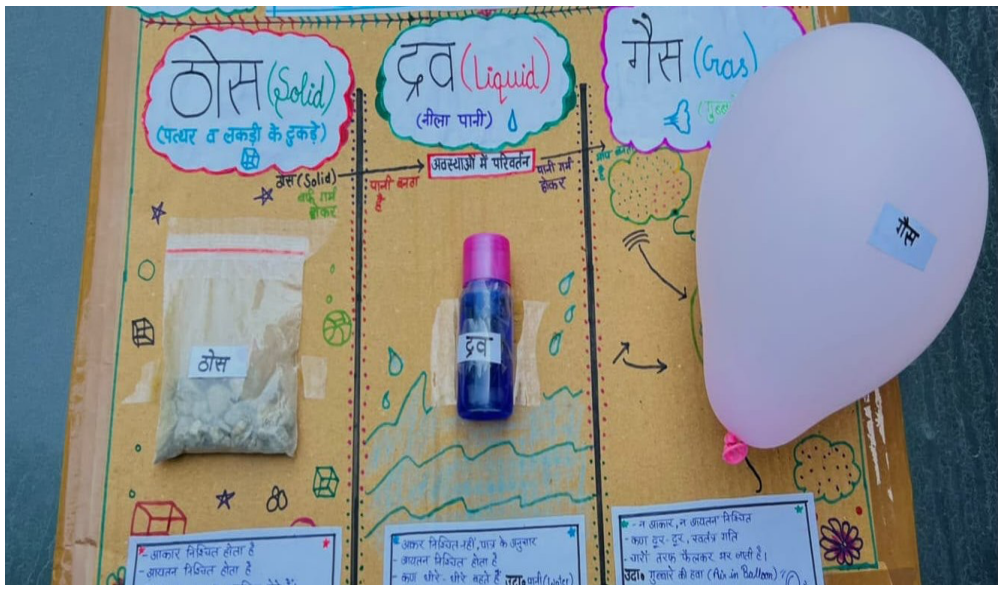

प्रशिक्षु हिमानी द्वारा बनाया गया TLM

प्रशिक्षु सानिया अंसारी द्वारा बनाया गया TLM

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए श्रव्य, दृश्य तथा श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है। ये शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों को विषयवस्तु समझने और लंबे समय तक याद रखने में सहायता करती हैं।

1. श्रव्य सहायक सामग्री: ऐसी सामग्री जिसे सुनकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है, श्रव्य सामग्री कहलाती है। उदाहरण–रेडियो, टेप रिकॉर्डर, हेडफोन और ऑडियो रिकॉर्डिंग। इनके माध्यम से विद्यार्थी सुनकर नई जानकारी प्राप्त करते हैं।

2. दृश्य सहायक सामग्री: ऐसी सामग्री जिसे देखकर सीखा जाता है, दृश्य सामग्री कहलाती है। उदाहरण–चित्र, चार्ट, मानचित्र, मॉडल और फ्लैश कार्ड। ये कठिन विषयों को सरलता से समझाने में सहायक होते हैं।



प्रशिक्षु सानिया अंसारी द्वारा बनाया गया TLM

3. श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री: ऐसी सामग्री जिसमें सुनने और देखने दोनों का अनुभव प्राप्त होता है, श्रव्य-दृश्य सामग्री कहलाती है। उदाहरण–टेलीविजन, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर और शैक्षिक वीडियो।

निष्कर्ष: इन सहायक सामग्रियों के प्रयोग से शिक्षण अधिक प्रभावी, आकर्षक और विद्यार्थी-केंद्रित बनता है।

अक्षांश एवं देशांतर रेखाएँ: डी.एल.एड. 2025 बैच प्रशिक्षु आयुषी गौतम द्वारा बनाया गया TLM

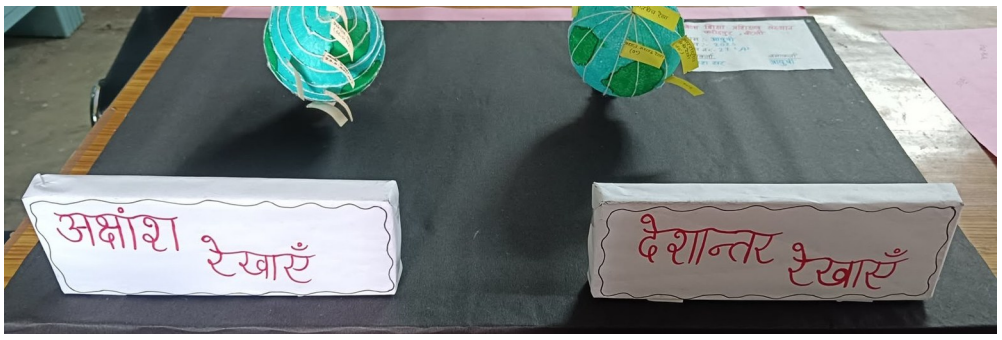

प्रशिक्षु आयुषी गौतम द्वारा बनाया गया TLM

पृथ्वी पर किसी स्थान की सही स्थिति ज्ञात करने के लिए अक्षांश एवं देशांतर रेखाओं का उपयोग किया जाता है। ये काल्पनिक रेखाएँ हैं, जिन्हें ग्लोब और मानचित्र पर दर्शाया जाता है।

1. अक्षांश रेखाएँ: अक्षांश रेखाएँ पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम दिशा में खींची गई काल्पनिक रेखाएँ हैं। ये भूमध्य रेखा के समानांतर होती हैं। भूमध्य रेखा शून्य डिग्री अक्षांश पर स्थित है। यह पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध में बाँटती है। प्रमुख अक्षांश रेखाएँ कर्क रेखा, मकर रेखा, उत्तरी ध्रुव वृत्त और दक्षिणी ध्रुव वृत्त हैं।

2. देशांतर रेखाएँ: देशांतर रेखाएँ उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक खींची गई काल्पनिक रेखाएँ हैं। प्रधान मध्याह्न रेखा शून्य डिग्री देशांतर पर स्थित है। यह ग्रीनिच से होकर गुजरती है। देशांतर रेखाओं की सहायता से समय और स्थान का निर्धारण किया जाता है।

अक्षांश और देशांतर रेखाएँ पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति जानने तथा मानचित्र पढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कविता

शिक्षकों को समर्पित: संस्कारों, ज्ञान और सफलता का मार्ग दिखाने वाले गुरुओं को नमन

जब पहला पग पड़ा कॉलेज में,
तब मैं कोरा पन्ना थी।

मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके,
एक अच्छा इंसान बनना था।

हाँ, साथ दिया मेरे शिक्षकों ने,
और सिखाई हर नई बात मुझे।

अपनी लिखी कुछ पंक्तियों में,
मैं नमन करूंगी आज उन्हें।

तेरे उपकारों को, ऐ अध्यापक,
हम जन्मों तक न भूलेंगे।

हमें याद आएगी बहुत तुम्हारी,
जब कामयाबी का झूला झूलेंगे।

दृढ़ संकल्प लेना सिखाते हो,
हमें संस्कारों का महत्व सिखाते हो।

भटके हुए हर राही को,
सफलता का मार्ग दिखाते हो।

नज़र सब पर एक समान रखते हो,
न कभी शिष्यों में भेदभाव करते हो।

किसी नादान से गलती हो जाए,
तो सीख देकर माफ़ करते हो।

हम में छुपे गुणों को तराशकर,
हम पर हुनर का रंग चढ़ाते हो।

हर शिक्षक खुद में एक संस्था है,
जो देश को आगे बढ़ाता है।

वंदना सिंह, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2024

लेख

रघुकुल की महारानी सीता: राजधर्म और स्वाभिमान की सशक्त प्रतिमूर्ति

सीता को केवल आँसुओं, वनवास और अग्निपरीक्षा में समेट देना उस व्यक्तित्व को छोटा करना है, जिसने विपत्तियों के बीच भी अपने विवेक और स्वाभिमान का दीप बुझने नहीं दिया। वे मिथिला के राजा जनक की पुत्री थीं, उस परंपरा की उत्तराधिकारी, जहाँ ज्ञान और आत्मचिंतन को महत्व प्राप्त था। रघुकुल की वधू के रूप में उन्होंने मर्यादा को अपनाया, पर अपनी पहचान को कभी केवल किसी संबंध तक सीमित नहीं होने दिया।

राम एक अद्भुत राजा थे, किंतु सीता भी राजधर्म और कुल-मर्यादा के निर्वाह में उनके समकक्ष थीं। उन्होंने रानी होने के दायित्व को केवल राजमहल के वैभव में नहीं, बल्कि त्याग, विवेक, कर्तव्य और नैतिक दृढ़ता में जिया। राम ने जहाँ शासन की मर्यादा को प्रतिष्ठित किया, वहीं सीता ने अपने आचरण से उस मर्यादा की आत्मा को जीवित रखा। उनका नेतृत्व सिंहासन से नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में लिए गए निर्णयों और अडिग चरित्र से प्रकट होता है।

अयोध्याकाण्ड में जब राम उन्हें वन में साथ ले जाने से रोकते हैं, तब वे दृढ़ तर्कों के साथ अपना पक्ष रखती हैं। वे वन के कठिन जीवन से भयभीत नहीं होतीं और अपने जीवन के विषय में निर्णय लेने का साहस दिखाती हैं। उनका वनगमन विवशता नहीं, अपने संबंध और कर्तव्य के प्रति उनकी सचेत प्रतिबद्धता थी।

लंका में सीता का चरित्र और भी तेजस्वी दिखाई देता है। एक ओर रावण का स्वर्णिम वैभव, सत्ता और धमकियाँ थीं, दूसरी ओर अशोक-वाटिका में बैठी एक निःशस्त्र स्त्री। किंतु शक्ति का अर्थ केवल शस्त्र धारण करना नहीं होता। रावण के सामने तिनका रखकर उसे अपनी सीमा का बोध कराना उनके स्वाभिमान का सशक्त प्रतीक है। उन्होंने उसके प्रलोभनों को अस्वीकार किया और उसके अनुचित आचरण का निर्भीक विरोध किया। लंका के स्वर्ण से उनका चरित्र अधिक मूल्यवान सिद्ध हुआ, क्योंकि उनका आत्मसम्मान किसी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता था।

हनुमान जब उन्हें तत्काल अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव देते हैं, तब सीता उनके सामर्थ्य को नकारती नहीं, बल्कि संभावित जोखिमों और राम के लंका पहुँचने के महत्व पर विचार करती हैं। उनका निर्णय भावनाओं से नहीं, धर्म, विवेक और परिणामों की समझ से

निर्देशित होता है। संकट के बीच भी उनका चिंतन उन्हें दृढ़ और दूरदर्शी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

आश्रम में लव-कुश का पालन-पोषण करते हुए सीता मातृत्व को भी साहस और संस्कार की शक्ति बनाती हैं। वे अपने पुत्रों के जीवन में ज्ञान, अनुशासन और धर्मबोध के संस्कार रोपती हैं। अंततः सभा में धरती को संबोधित करके वे अपने जीवन के सत्य की घोषणा करती हैं। यह प्रसंग उनकी यात्रा का मार्मिक अंत है, जिसमें वे अपने आत्मसम्मान और सत्यनिष्ठा पर अडिग रहती हैं।

सीता की महानता इस बात में नहीं कि उन्होंने कितना दुःख सहा, बल्कि इसमें है कि दुःख ने उनसे उनका विवेक नहीं छीना। वे वह शक्ति हैं, जिसे परिस्थितियाँ घायल कर सकती हैं, पर जिसकी गरिमा को पराजित नहीं कर सकतीं। राम की महानता उनके राजधर्म में थी और सीता की महानता उस नैतिक दृढ़ता में, जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी उनके चरित्र को अडिग रखा। उनकी विरासत हमें सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व ऊँचे सिंहासन से नहीं, कठिन समय में निभाए गए दायित्वों और लिए गए दृढ़ निर्णयों से जन्म लेता है।

अनू तोमर, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025

अनुभव

निपुण आकलन में मेरा प्रथम अनुभव

निपुण आकलन में मेरा पहला अनुभव बहुत अच्छा और यादगार रहा। इस दौरान मुझे बच्चों की पढ़ने-लिखने की क्षमता को समझने का अवसर मिला।

निपुण आकलन के लिए SRG की टीम द्वारा हमें डायट फरीदपुर में प्रशिक्षण दिया गया कि किस प्रकार यह कार्य संपन्न होगा।

SRG के निर्देशानुसार, हमारे सभी साथियों ने अपने फोन में निपुण लक्ष्य ऐप डाउनलोड किया। उन्होंने बताया कि आकलन का कार्य इसी ऐप पर होगा। अगले दिन मैं निपुण आकलन के लिए विद्यालय गई।

मुझे निपुण आकलन के लिए फतेहगंज पश्चिमी ब्लॉक मिला था, जहाँ मुझे एक दिन में दो विद्यालयों का आकलन करना था। मैंने आकलन के समय देखा कि कुछ विद्यालयों में निपुण आकलन की तैयारी शिक्षकों (अरविंद गंगवार जी प्राथमिक विद्यालय फरीदापुर जागीर, प्रशांत अग्रवाल प्राथमिक विद्यालय डहिया, प्राथमिक विद्यालय कुरतरा) के माध्यम से बहुत अच्छी कराई गई थी। तैयारी के अनुरूप बच्चों का प्रदर्शन उत्तम रहा।

मैंने देखा कि बच्चे अच्छे से पढ़ पा रहे थे तथा जोड़, घटाव, गुणा, भाग, दी गई संख्या को पहचानना, संख्या पैटर्न को पूरा करना और रुपये की पहचान भली-भाँति कर पा रहे थे।

कुछ बच्चों ने सभी प्रश्नों के उत्तर आसानी से दिए, जबकि कुछ बच्चों को थोड़ी सहायता की आवश्यकता हुई। मैंने बच्चों को प्यार से समझाया और उनका उत्साह बढ़ाया। इससे बच्चों ने बिना डर के आकलन में भाग लिया।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगी कि हर बच्चे की सोचने-समझने की क्षमता अलग होती है। इस आकलन से मुझे यह समझने में मदद मिली कि हर बच्चा अलग तरीके से और अपनी गति से सीखता है।

मेरी सीख:

मैंने सीखा कि आकलन केवल बच्चों की परीक्षा लेना नहीं है। इससे हमें यह पता चलता है कि बच्चा क्या सीख चुका है और उसे कहाँ अधिक अभ्यास की आवश्यकता है।

मैंने यह भी सीखा कि बच्चों के साथ धैर्य, प्यार और सकारात्मक व्यवहार रखना बहुत जरूरी है। प्रोत्साहन मिलने पर बच्चे बेहतर तरीके से सीखते हैं। मेरा निपुण आकलन का अनुभव बेहद खूबसूरत, प्रेरणादायक, मनमोहक और सराहनीय रहा।

अतः मैं कुछ पंक्तियाँ कहना चाहूँगी:

सीखने की राह में एक नया अनुभव मिला, बच्चों को समझने का सुंदर अवसर मिला। निपुण आकलन ने दिल को यह एहसास कराया, हर बच्चा खास है, बस सही मार्गदर्शन मिला।

वंदना सिंह, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2024

31 अक्टूबर

राष्ट्रीय एकता दिवस

हर साल 31 अक्टूबर को भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार द्वारा इस दिवस को मनाने की घोषणा वर्ष 2014 में की गई थी। तब से हर साल पूरे देश में इस दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। आज़ादी के समय भारत 560 से अधिक छोटी-बड़ी रियासतों में बँटा हुआ था। सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी सूझबूझ और दृढ़ संकल्प से इन सभी का भारत में शांतिपूर्ण विलय कराया और अखंड भारत का निर्माण किया। राष्ट्र को एकजुट करने के उनके इसी फ़ौलादी इरादे के कारण उन्हें **"भारत का लौह पुरुष"** भी कहा जाता है। गुजरात के केवडिया (एकता नगर) में स्थित सरदार पटेल की 182 मीटर ऊँची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' पर देश के प्रधानमंत्री की उपस्थिति में भव्य परेड, पुलिस बलों के मार्च पास्ट और सांस्कृतिक कार्यक्रमोंं का आयोजन होता है। केंद्र सरकार सरदार पटेल की 150वीं जयंती को एक बड़े राष्ट्रीय उत्सव के रूप में 31 अक्टूबर 2024 से लेकर 31 अक्टूबर 2026 तक पूरे दो वर्ष के लिए मना रही है, जिससे इस समय देश में राष्ट्रीय एकता से जुड़े कार्यक्रमों का महत्व और बढ़ गया है। इस दिन सभी सरकारी संस्थानों, स्कूलों और कॉलेजों में देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए सामूहिक रूप से शपथ ली जाती है। इस दिवस को मनाने के मुख्य उद्देश्य हैं– (1) भारत की विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के बीच आपसी सद्भाव और एकजुटता की भावना को मजबूत करना; (2) नागरिकों को यह याद दिलाना कि राष्ट्र की सुरक्षा और अखंडता बनाए रखने में हर नागरिक का योगदान आवश्यक है; तथा (3) आने वाली पीढ़ी को सरदार पटेल के संघर्षों और राष्ट्र-निर्माण संबंधी विचारों से अवगत कराना।

प्रस्तुति: रानी यादव, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025

अगले अंक हेतु आमंत्रण

प्रिय पाठकगण, DIET मासिक बुलेटिन के आगामी अंक के लिए आपकी रचनाओं एवं योगदान का स्वागत है। आप अपने लेख, कविता, लघु कहानी, अनुभव, पुस्तक समीक्षा, शैक्षिक विचार, नवाचार, चित्रकला, फोटोग्राफ तथा संस्थान की गतिविधियों से संबंधित सामग्री हमारी ई-मेल ricdietbareilly@gmail.com पर भेज सकते हैं।

अपनी प्रविष्टियाँ प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भेज सकते हैं। चयनित प्रविष्टियों को आगामी अंक में सम्मिलित किया जाएगा। आइए, अपने विचारों, रचनात्मकता और नवाचारों को साझा करें तथा इस बुलेटिन को ज्ञान, शिक्षा, नवाचार और प्रेरणा का सशक्त मंच बनाएं।

संपादकीय मंडल

विधि एवं शिक्षा

इंटरनेट मौलिक अधिकार है: सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने 15 अक्टूबर 2026 को एक बहुत बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने साफ कहा है कि इंटरनेट का इस्तेमाल करना हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार (Fundamental Right) है।

फैसले की पूरी जानकारी:

केस क्या था?



यह केस NGO Just Rights for Children Alliance ने दायर किया था। NGO ने कहा था कि सोशल मीडिया पर बच्चों के खिलाफ यौन शोषण वाली सामग्री (CSEAM) बहुत तेजी से फैल रही है।

किस बेंच ने फैसला दिया?

जस्टिस J.B. पारदीवाला और जस्टिस K. विनोद चंद्रन की बेंच ने 137 पृष्ठों का यह आदेश दिया।

कोर्ट ने क्या कहा?

"हमें यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि इंटरनेट तक पहुँच और उसके उपयोग का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के साथ अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। हमारे बच्चे, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, समान अधिकारों का आनंद लेते हैं, और उन्हें पूरी तरह से इससे वंचित करना उतना ही बेतुका होगा जितना यह कहना कि एक निश्चित उम्र से कम के बच्चों में अंतरात्मा नहीं होती।"

कोर्ट ने आगे कहा:

अनुच्छेद 21: जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार अनुच्छेद 19(1)(a): भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार इंटरनेट विचारों, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सूचना का बाज़ार है। खासकर दूर-दराज के बच्चों के लिए यह पढ़ाई का एकमात्र साधन है।

क्या बच्चों के लिए इंटरनेट पर रोक लगेगी?

नहीं। कोर्ट ने कहा कि बच्चों को ऑनलाइन खतरे से बचाने के नाम पर पूरे इंटरनेट पर ही रोक लगाना गलत है। यह disproportionate (अनुपातहीन) होगा।

बच्चों पर नहीं, बल्कि उस खतरनाक सामग्री और उसे बनाने/फैलाने वालों पर कार्रवाई होनी चाहिए।

हालांकि कोर्ट ने कहा कि इसका मतलब यह नहीं है कि कोई रोक नहीं होगी। सरकार उम्र के हिसाब से सुरक्षा (age-based safeguards), parental guidance और child-mode account जैसे नियम बना सकती है।

केंद्र सरकार को निर्देश:

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को आदेश दिया है कि वह सोशल मीडिया कंपनियों के साथ मिलकर CSEAM को तुरंत ढूंढने और हटाने के लिए एक National Database बनाए।

यह फैसला Pragya Prasun vs Union of India (2025) के फैसले को आगे बढ़ाता है, जिसमें डिजिटल एक्सेस को जीवन के अधिकार का हिस्सा माना गया था।

सुप्रीत शर्मा, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025



खेल जगत • अक्टूबर 2026

एशियाई खेल 2026



एशियाई खेलों में भारत का शानदार प्रदर्शन, 85 पदकों के साथ चौथा स्थान

नई दिल्ली। अक्टूबर माह में संपन्न हुए एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए देश का गौरव बढ़ाया। जापान के आइची-नागोया में आयोजित प्रतियोगिता में भारत ने कुल 85 पदक प्राप्त किए। इनमें 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक शामिल रहे। भारत पदक तालिका में चौथे स्थान पर रहा। यह एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। एथलेटिक्स में भारत को सर्वाधिक 24 पदक मिले, जबकि निशानेबाजी में 15 और तीरंदाजी में 9 पदक प्राप्त हुए। भारतीय खिलाड़ियों की इस उपलब्धि ने देश में खेल प्रतिभाओं और खेल संस्कृति के बढ़ते स्तर को प्रदर्शित किया।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने रचा इतिहास, लगातार दूसरी बार जीता स्वर्ण पदक

आइची-नागोया। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने एशियाई खेलों के फाइनल मुकाबले में मलेशिया को 5-1 से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस जीत के साथ भारत ने लगातार दूसरी बार एशियाई खेलों में पुरुष हॉकी का स्वर्ण पदक जीतने का गौरव हासिल किया। कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दो गोल किए। इस ऐतिहासिक जीत के साथ भारतीय टीम ने वर्ष 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाले ओलंपिक खेलों के लिए भी सीधा स्थान सुनिश्चित किया। भारतीय हॉकी टीम की यह सफलता देश के युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने जिम्बाब्वे को 3-0 से हराकर सीरीज जीती

रायपुर। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने अक्टूबर में जिम्बाब्वे के विरुद्ध शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए तीन मैचों की टी-20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला 3-0 से अपने नाम कर ली। 20 अक्टूबर को खेले गए तीसरे मुकाबले में भारतीय टीम ने 92 रनों से जीत दर्ज की। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 216 रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने मात्र 41 गेंदों में नाबाद 91 रन की शानदार पारी खेली, जबकि शेफाली वर्मा ने 69 रनों का योगदान दिया। भारतीय गेंदबाजों ने भी बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए जिम्बाब्वे की टीम को निर्धारित लक्ष्य से काफी पीछे रोक दिया। यह जीत भारतीय महिला क्रिकेट की मजबूत स्थिति और खिलाड़ियों की प्रतिभा को दर्शाती है।

एथलेटिक्स की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 8 से 11 अक्टूबर तक 65वीं राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में देशभर के खिलाड़ियों ने दौड़, लंबी कूद, ऊँची कूद, भाला फेंक, गोला फेंक और अन्य एथलेटिक्स स्पर्धाओं में हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में कुल 48 फाइनल मुकाबले आयोजित हुए। रेलवे स्पोर्ट्स ने पदक तालिका में पहला स्थान प्राप्त किया। पुरुष वर्ग में एसएससीबी और महिला वर्ग में रेलवे स्पोर्ट्स ने टीम चैंपियनशिप अपने नाम की। इस प्रतियोगिता ने देश के उभरते एथलीटों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अनमोल खरब ने जीता अंतरराष्ट्रीय खिताब

अंतरराष्ट्रीय खेल जगत। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अनमोल खरब ने अक्टूबर में तुर्किये इंटरनेशनल चैलेंज प्रतियोगिता में महिला एकल का खिताब जीतकर देश को गौरवान्वित किया। फाइनल मुकाबले में उन्होंने अपने ही देश की खिलाड़ी आकर्षी कश्यप को सीधे दो गेमों में 21-11 और 21-14 से पराजित किया। यह अनमोल खरब का तीसरा अंतरराष्ट्रीय सीनियर खिताब रहा। उनकी इस उपलब्धि से भारतीय बैडमिंटन में उभरती युवा प्रतिभाओं को नई पहचान मिली है।

निशानेबाजी में उदयवीर सिद्धू ने जीता विश्व कप स्वर्ण पदक

काहिरा। भारतीय निशानेबाज उदयवीर सिद्धू ने मिस्र के काहिरा में आयोजित आईएसएसएफ राइफल एवं पिस्टल विश्व कप में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया। 11 अक्टूबर को आयोजित फाइनल मुकाबले में उन्होंने 240.6 अंक प्राप्त कर पहला स्थान हासिल किया। जर्मनी के क्रिश्चियन रिट्ज दूसरे और इटली के पाओलो मोन्ना तीसरे स्थान पर रहे। इस प्रतियोगिता में उदयवीर का प्रदर्शन भारतीय निशानेबाजी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा।

भारतीय स्केटिंग खिलाड़ी आनंदकुमार वेलकुमार ने जीता रजत पदक

पराग्वे। भारतीय खिलाड़ी आनंदकुमार वेलकुमार ने विश्व स्केटिंग खेलों में पुरुषों की 1000 मीटर स्प्रिंट स्पर्धा में रजत पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। उन्होंने प्रतियोगिता में शानदार गति और संतुलन का परिचय देते हुए दूसरा स्थान प्राप्त किया। स्वर्ण पदक से वह बेहद कम अंतर से चूक गए। उनकी इस उपलब्धि ने भारत में स्केटिंग जैसे खेलों के प्रति युवाओं की रुचि बढ़ाने का कार्य किया है।

अंडर-23 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में कोमल ने जीता कांस्य पदक

लास वेगास। भारतीय महिला पहलवान कोमल ने अंडर-23 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में महिलाओं की 59 किलोग्राम भारवर्ग स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया। कांस्य पदक के मुकाबले में उन्होंने कजाकिस्तान की विक्टोरिया खुसैनोवा को 7-2 से पराजित किया। कोमल ने अपने शानदार खेल, आत्मविश्वास

प्रस्तुति: शिवम यादव, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025



विजयदशमी विशेषांक

नई शुरुआत: विजयदशमी विशेषांक!

हमारे मासिक बुलेटिन के इस विशेषांक में आपका स्वागत है। इस बार हमारा "Educational Trivia" कॉलम केवल कक्षा के ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मज़ेदार पहेलियों, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक तथ्यों और पारंपरिक मूल्यों से जुड़े कुछ बौद्धिक गतिविधियाँ भी लेकर आया है। तो आइए, इस सफ़र की शुरुआत करते हैं हमारे सबसे रोचक सेगमेंट से!



मनो - मंथन: The Mind Lab

ROUND 1: आउट ऑफ़ द बॉक्स

क्या आप पारंपरिक सोच से हटकर कुछ अलग सोच सकते हैं? चलिए, इस विजयदशमी विशेषांक के सबसे अनूठे प्रतीक को अपनी बुद्धिमत्ता से पहचानकर दिखाइए:

वन-वन भटके, धर्म निभाया,
सत्य की ख़ातिर राज ठुकराया,
धनुष उठाकर अधर्म मिटाया,
प्रेम और मर्यादा का पाठ पढ़ाया,
नाम मेरा हर मन में बसता,
बताओ कौन, जो आदर्श कहलाता?

ROUND 2: ज्ञानचक्षु

इस महीने का विशेष विषय: विजयदशमी एवं सांस्कृतिक धरोहर (Vijaya Dashami & Cultural Heritage)

एक कुशल भावी शिक्षक वही है जिसकी सांस्कृतिक जड़ों और ऐतिहासिक पर्वों की समझ प्रगाढ़ हो। इस महीने के विशेष विषय "विजयदशमी" की तैयारी को परखिए और नीचे दिए गए 4 प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1: रामचरितमानस के अनुसार, वानरराज बालि किस प्राचीन प्रदेश के राजा थे?

(अ) कोसल
(ब) किष्किंधा
(स) मिथिला
(द) पंचवटी

प्रश्न 2: विजयादशमी के दिन किस पेड़ की पूजा करने और उसकी पत्तियाँ (सोने के रूप में) आपस में बाँटने की प्राचीन परंपरा है?

(अ) पीपल का पेड़
(ब) शमी का पेड़
(स) बरगद का पेड़
(द) आम का पेड़

प्रश्न 3: रामचरितमानस में कुल कितने कांड (अध्याय) हैं?

(अ) पाँच
(ब) सात
(स) नौ
(द) बारह

प्रश्न 4: लक्ष्मण जी के प्राण बचाने के लिए हनुमान जी लंका के किस राजवैद्य को लाए थे?

(अ) चरक वैद्य

(ब) सुषेण वैद्य

(स) धन्वंतरि

(द) जीवक वैद्य

ROUND 3: कैंपस डिटेक्टिव

The Profile File: #004

नियम एवं निर्देश: नीचे दिए गए ऐतिहासिक और शैक्षणिक संकेतों की सहायता से पहचानिए कि इस बार का 'स्टार डिटेक्टिव' कौन बनेगा। सही उत्तर नीचे दिए गए लिंक/क्यूआर कोड (QR Code) के माध्यम से भरकर सबमिट करें!

आपके लिए संकेत (Clues):

संकेत 1: मैंने अपनी वीरता, कूटनीति और गोरिल्ला युद्धनीति से दक्कन में मराठा साम्राज्य की नींव को मजबूत किया और मुगलों को कड़ी टक्कर दी।

संकेत 2: मेरे शासनकाल में महाराष्ट्र के ऐतिहासिक शहरों में विजयादशमी (दशहरा) के पर्व को भव्य राजकीय उत्सव और शक्ति की पूजा के रूप में विशेष महत्व मिला, जहाँ सीमोल्लंघन और शमी पूजन की परंपरा निभाई जाती थी।

संकेत 3: मुझे 'छत्रपति' की उपाधि से अलंकृत किया गया और भारतीय इतिहास में एक न्यायप्रिय, प्रजापालक और प्रतापी राजा के रूप में अमर किया गया।

जवाब कैसे दें? (Scan & Win!)

1. नीचे दिए गए QR Code को अपने फोन से स्कैन करें।

2. गूगल फॉर्म में अपना नाम और संस्थान का नाम दर्ज करें।

3. अपना सही उत्तर लिखकर सबमिट करें।

क्या आप जानते हैं?

इस विजयदशमी विशेषांक में आइए शिक्षा और इतिहास के कुछ रोचक और महत्वपूर्ण तथ्यों को जानें: कर्नाटक के मैसूर का दशहरा (नाडहब्बा) भारत का सबसे भव्य राजकीय उत्सव है। विजयादशमी के दिन यहाँ सजे-धजे हाथियों का एक विशाल जुलूस निकाला जाता है, जिसे 'जम्बू सवारी' कहते हैं। भाषाई और सांस्कृतिक दृष्टि से 'दशहरा' शब्द संस्कृत के 'दश' (दस) और 'हर' (हरना) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है 'दस पापों या बुराइयों को हरने वाला'। मान्यता है कि यह पर्व केवल रावण-वध का ही नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर के 10 अवगुणों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, स्वार्थ, अन्याय, अमानवीयता और अहंकार) के नाश का भी प्रतीक है।

-कविता, प्रशिक्षु, डी एल एड 2025

पाठ्यपुस्तक समीक्षा • कक्षा 3

कक्षा 3 - "हमारा अद्भुत संसार"

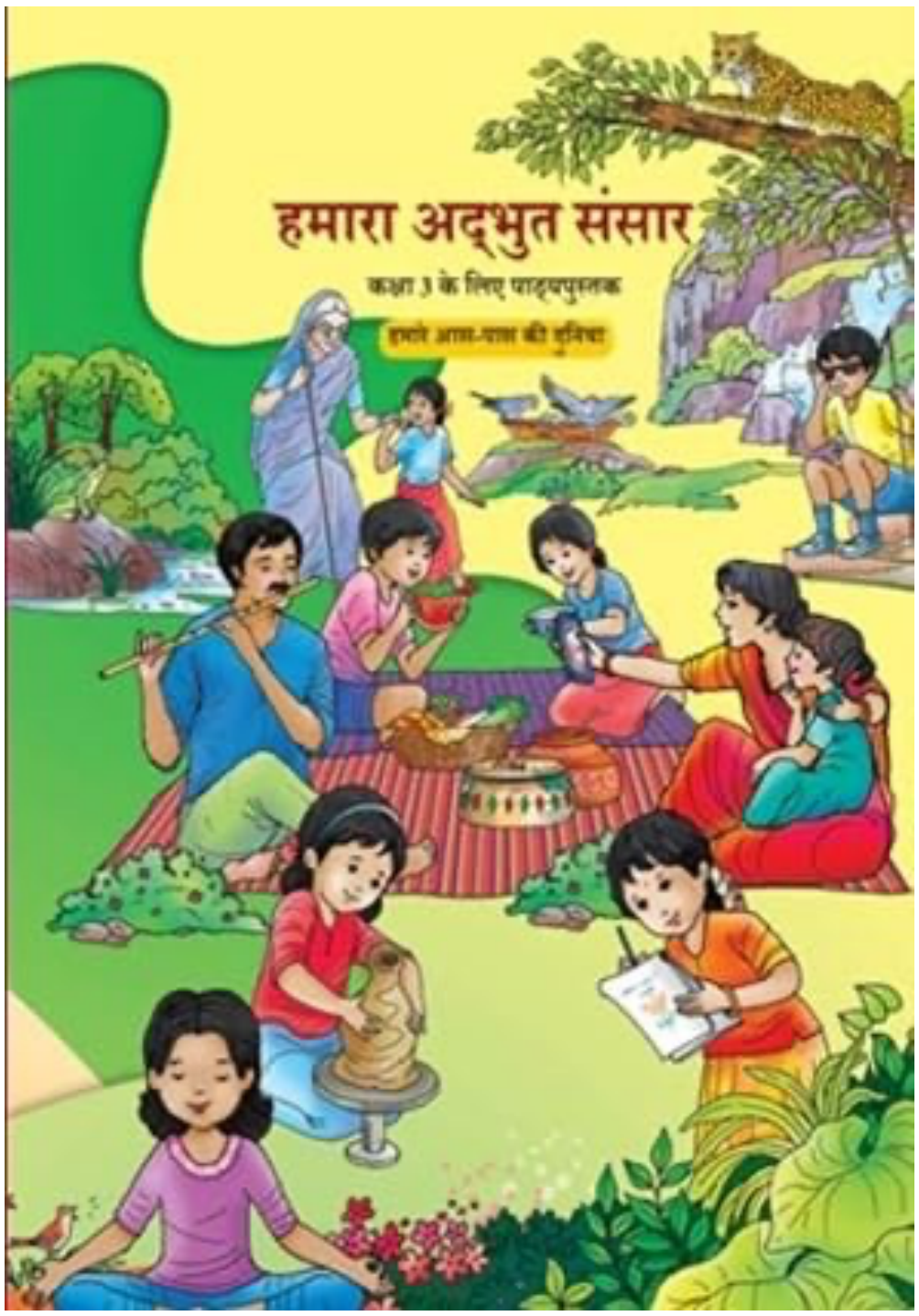

पाठ्यपुस्तक का आवरण पृष्ठ

पाठ्यपुस्तक के बारे में सामान्य जानकारी

मैंने कक्षा 3 की **"हमारा अद्भुत संसार"** नाम की पाठ्यपुस्तक को देखा और इसके अलग-अलग पाठ, चित्र, प्रश्न और गतिविधियाँ देखीं। यह किताब बच्चों को अपने आसपास की चीज़ों और अपने संसार के बारे में समझाने के लिए बनाई गई है।

किताब का नाम "हमारा अद्भुत संसार" है और यह कक्षा 3 के बच्चों के लिए है। इसके आवरण पृष्ठ पर बच्चे, परिवार, पेड़-पौधे, जानवर और प्रकृति से जुड़ी चीज़ें दिखाई गई हैं। कवर देखकर ही लगता है कि किताब बच्चों को उनके आसपास की दुनिया से जोड़ती है। इस किताब में बच्चों के घर, परिवार, आसपास की चीज़ों, पेड़-पौधों और जानवरों आदि से जुड़ी बातें दी गई हैं। इसमें बच्चों को केवल पढ़ने के बजाय कुछ चीज़ें देखने, सोचने, चर्चा करने और गतिविधियाँ करने का मौका भी दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के भौतिक पहलू

(क) आवरण पृष्ठ

किताब का आवरण पृष्ठ अच्छा बनाया गया है। इसमें बच्चों, परिवार, पेड़-पौधों और जानवरों को दिखाया गया है। कवर देखने में अच्छा लगता है और बच्चों का ध्यान अपनी ओर खींचता है।

(ख) प्रस्तावना

इस किताब की प्रस्तावना में बताया गया है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2023 में कक्षा 3 से 5 के बच्चों के लिए "हमारे आसपास की दुनिया" को सीखने का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है। इसी बात को ध्यान में रखकर "हमारा अद्भुत संसार" पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस किताब का मुख्य उद्देश्य बच्चों को अपने आसपास के परिवार, समुदाय, पेड़-पौधे, जानवर, पानी, भोजन, घर और दूसरी चीज़ों के बारे में समझाना है। इसमें बच्चों को केवल किताब पढ़कर जानकारी लेने के बजाय देखने, खोजने, जाँचने, सवाल पूछने और अपनी बात बताने के अवसर दिए गए हैं। प्रस्तावना में यह भी बताया गया है कि किताब में बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु, बच्चों की गतिविधियाँ और मूल्यांकन को साथ रखा गया है। किताब के पाठ बच्चों के आसपास की दुनिया से जुड़े हुए हैं, इसलिए बच्चे अपने अनुभवों को पाठ से जोड़कर आसानी से सीख सकते हैं। इस किताब में परिवार और समुदाय, पेड़-पौधे और जीव-जंतु, पानी और भोजन, घर तथा आसपास की चीज़ों जैसे विषयों को शामिल किया गया है। साथ ही बच्चों में अच्छे स्वास्थ्य, स्वच्छता, प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और आसपास की चीज़ों को समझने की आदत विकसित करने पर भी ध्यान दिया गया है।

(ग) कागज़ और बाइंडिंग की गुणवत्ता

किताब की बाइंडिंग ठीक है और आवरण पृष्ठ भी अच्छा बनाया गया है, लेकिन पन्नों की गुणवत्ता बहुत अच्छी नहीं है। लिखी हुई सामग्री साफ दिखाई देती है, लेकिन

कुछ चित्रों में रंग ज़्यादा फैले हुए हैं, जिससे चित्र स्पष्ट दिखाई नहीं देते।

(घ) फॉन्ट का आकार

किताब में लिखे अक्षरों का आकार बच्चों के पढ़ने के हिसाब से ठीक है। अक्षर बहुत छोटे नहीं हैं, इसलिए बच्चों को पढ़ने में ज़्यादा परेशानी नहीं होनी चाहिए।

(ङ) चित्र और चित्रण

किताब में जगह-जगह पाठ को समझाने के लिए चित्र दिए गए हैं। कक्षा 3 के बच्चों के लिए चित्र बहुत उपयोगी हैं, क्योंकि बच्चे कई बार लिखी हुई बात से ज़्यादा चित्र देखकर जल्दी समझ लेते हैं। इसके अलावा कई जगह बच्चों को गतिविधि के अनुसार खुद चित्र बनाने के लिए भी कहा गया है। जैसे पहले पाठ में परिवार के सदस्य एक-दूसरे की किस तरह सहायता करते हैं, उसे कुछ चित्रों द्वारा बनाकर दिखाने के लिए कहा गया है। इससे बच्चे अपनी समझ और अपने अनुभव के अनुसार चित्र बनाकर भी सीख सकते हैं।

पाठ्यपुस्तक की आंतरिक विशेषताएँ

(क) अध्याय की संरचना

किताब के पाठ इस तरह रखे गए हैं कि बच्चे धीरे-धीरे अपने आसपास की चीज़ों को समझ सकें। पाठों में केवल जानकारी देने के बजाय बच्चों को सोचने और अपनी बात बताने का मौका भी दिया गया है।

(ख) परिचय अनुभाग

पाठों की शुरुआत बच्चों की रोज़ की जिंदगी से जुड़ी बातों से की गई है। बच्चे अपने घर, परिवार, स्कूल और आसपास की चीज़ों को पहले से जानते हैं। जब उन्हीं चीज़ों से पाठ शुरू होता है तो उन्हें समझना आसान हो जाता है।

(ग) भाषा का प्रयोग

किताब की भाषा बच्चों के स्तर के हिसाब से सरल रखी गई है। बहुत कठिन शब्दों की जगह ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है जिसे कक्षा 3 का बच्चा समझ सके।

(घ) प्रयोग और अभ्यास

किताब में बच्चों को केवल प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए नहीं कहा गया है, बल्कि कई तरह की गतिविधियाँ और चर्चा भी दी गई हैं। जैसे अपने परिवार के सदस्यों के नाम बताना, उनका आपसे क्या रिश्ता है और आप उन्हें किस नाम से बुलाते हैं, इस बारे में पूछने को कहा गया है। इसी तरह बच्चों से यह भी चर्चा करने को कहा गया है कि वे अपने परिवार के बड़ों और दूसरे सदस्यों के साथ कौन-कौन से खेल खेलते हैं। कुछ जगह बच्चों से जानवरों के बारे में भी पूछा गया है कि क्या हमें उन्हें तंग करना या चोट पहुँचाना चाहिए। इस तरह की गतिविधियों से बच्चे अपने अनुभव से सीखते हैं और अपनी बात भी बताते हैं।

(ङ) चिंतन बिंदु

किताब में बच्चों को केवल पाठ पढ़ने के बाद उत्तर देने के लिए नहीं कहा गया है, बल्कि उन्हें अपने अनुभव के बारे में सोचने और अपनी बात बताने का मौका भी दिया गया है। उदाहरण के लिए, पृष्ठ संख्या 17 पर "आइए, मंथन करें"

गतिविधि दी गई है। इसमें पूछा गया है कि परिवार के सदस्य एक-दूसरे के लिए अपना स्नेह किस तरह दिखाते हैं। साथ ही बच्चों से अपने परिवार के साथ बिताए खुशियों के कुछ पलों का चित्र बनाने के लिए भी कहा गया है।

मुझे यह गतिविधि अच्छी लगी, क्योंकि इससे बच्चा अपने परिवार के बारे में सोचता है और अपने अनुभव को बात और चित्र दोनों के माध्यम से बताता है। इससे बच्चों को अपने विचार बताने और अपने अनुभव से सीखने का मौका मिलता

(च) मूल्यांकन

किताब में बच्चों की समझ देखने के लिए अलग-अलग तरह के प्रश्न और गतिविधियाँ दी गई हैं। जैसे पृष्ठ संख्या 15 पर लिखा है कि "बेला के परिवार में सभी सदस्य कुछ न कुछ काम करते हैं। आपके परिवार में कौन क्या काम करता है, पता लगाओ" और पृष्ठ संख्या 16 पर दी गई तालिका को भरने के लिए कहा गया है।

इस तरह की गतिविधि से बच्चे को पाठ में बताई गई बातों को अपने परिवार से जोड़कर जवाब देना पड़ता है। इससे शिक्षक यह समझ सकते हैं कि बच्चे ने अध्याय को कितने ध्यान से पढ़ा या सुना और वह बताई गई बात को कितना समझ पाया है।

(छ) अध्याय के अंत के तत्व

अध्याय के अंत में दिए गए अभ्यास और गतिविधियों से बच्चे पूरे पाठ को दोबारा याद कर सकते हैं। इनसे शिक्षक को भी यह पता चल सकता है कि बच्चे ने पाठ को कितना समझा है और कहाँ उसे दोबारा समझाने की जरूरत है।

NEP 2020 और NCF 2023 के साथ तालमेल

मेरे हिसाब से यह किताब बच्चों को केवल रटने के लिए नहीं कहती। इसमें बच्चों को अपने आसपास की चीज़ों को देखने और समझने का मौका दिया गया है।

बच्चों के लिए पढ़ाई तब ज़्यादा अच्छी होती है जब वह उनके रोज़ के जीवन से जुड़ी हो। इस किताब में भी आसपास की दुनिया से जुड़ी चीज़ों को शामिल किया गया है।

इसमें बच्चों को अपनी बात बताने, सवालों के जवाब देने, चीज़ों को देखने और गतिविधियों में भाग लेने का मौका मिलता है। इस कारण मुझे लगता है कि किताब NEP 2020 और NCF 2023 में बताए गए बच्चे को गतिविधि और अनुभव के द्वारा सीखने वाले तरीके से जुड़ती है।

विषयवस्तु के संदर्भ में

(क) IKS

किताब में हमारे आसपास के जीवन और भारतीय समाज से जुड़ी बातें दिखाई देती हैं। बच्चों को अपने परिवार, आसपास के लोगों, प्रकृति और रोज़मर्रा के जीवन को समझने का मौका मिलता है।

इससे बच्चे अपने आसपास की चीज़ों को ध्यान से देखना सीख सकते हैं।

(ख) समावेशी

किताब में अलग-अलग तरह के बच्चों और लोगों को दिखाने की कोशिश की गई है। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिल सकती है कि सभी लोग एक जैसे नहीं होते, फिर भी सभी हमारे समाज का हिस्सा हैं।

(ग) ICT का एकीकरण

किताब के हर पाठ के ऊपर एक QR कोड दिया गया है। इस QR कोड को DIKSHA या e-पाठशाला जैसे ऐप पर स्कैन करके किताब को डिजिटल रूप में फोन पर भी देखा जा सकता है।

इसका फायदा शिक्षक भी उठा सकते हैं। मान लीजिए किसी शिक्षक के पास किताब नहीं है, तो वह जिस पाठ को पढ़ा रहे हैं, उसके QR कोड को अपने फोन से स्कैन करके उसी पाठ को फोन पर देखकर बच्चों को पढ़ा सकते हैं। इससे किसी बच्चे की किताब लेकर पढ़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और उसकी पढ़ाई भी प्रभावित नहीं होगी।

अन्य विशेषताएँ

मुझे इस किताब की सबसे अच्छी बात यह लगी कि इसमें बच्चों के आसपास की दुनिया को पढ़ाई से जोड़ा गया है।

किताब में चित्रों का भी अच्छा इस्तेमाल किया गया है। छोटे बच्चों के लिए चित्र बहुत जरूरी होते हैं, क्योंकि कई बार जो बात केवल लिखकर समझाना मुश्किल होती है, वह चित्र देखकर आसानी से समझ आ जाती है।

एक और अच्छी बात यह है कि बच्चों को अपनी बात बताने और अपने अनुभव से जोड़ने का मौका मिलता है।

निष्कर्ष

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि "हमारा अद्भुत संसार" कक्षा 3 के बच्चों के लिए एक उपयोगी और रोचक किताब है।

मुझे इसमें सबसे अच्छी बात यह लगी कि किताब बच्चों को उनके आसपास की दुनिया से जोड़ती है। इसमें चित्र, प्रश्न और गतिविधियाँ होने के कारण बच्चों की रुचि बनी रह सकती है।

किताब की भाषा भी बच्चों के स्तर के अनुसार रखी गई है। बच्चे इसमें दी गई बातों को अपने घर, स्कूल और आसपास के जीवन से जोड़ सकते हैं।

कुल मिलाकर मुझे यह किताब अच्छी लगी। यह बच्चों को पढ़ने के साथ-साथ अपने आसपास की दुनिया को देखने, समझने और उसके बारे में सोचने का मौका देती है।

आदर्श शर्मा, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025

अक्टूबर संस्करण • विजयादशमी विशेष

विजयादशमी – सत्य एवं धर्म की विजय

अधर्म पर धर्म और असत्य पर सत्य की शाश्वत विजय का पावन पर्व

दशहरा का वास्तविक संदेश

विजयादशमी केवल लंकापति रावण पर भगवान श्री राम की विजय या महिषासुर पर माँ दुर्गा की जीत का उत्सव नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए आत्म-सुधार का एक अनमोल अवसर है। यह पर्व हमें सिखाता है कि बाह्य बुराइयों से पहले हमें अपने भीतर छिपे अवगुणों का संहार करना चाहिए।

असली रावण हमारे आलस्य, क्रोध और संदेह में बसता है। इसे जलाना ही सच्ची विजयादशमी है।

शिक्षा के मार्ग पर चलते हुए हमें अनुशासन, धैर्य और सत्यनिष्ठा का धनुष धारण करना चाहिए। जब हम अज्ञानता और भय रूपी शत्रुओं को परास्त करेंगे, तभी हमारे जीवन में विद्या का प्रकाश फैलेगा।

रचना: कृतिका तिवारी

इस दशहरा मिटाएँ १० मानसिक अवगुण

१. क्रोध (Anger)
२. अहंकार (Ego)
३. आलस्य (Laziness)
४. लोभ (Greed)
५. ईर्ष्या (Jealousy)
६. मोह (Attachment)
७. भय (Fear)
८. असत्य (Untruth)
९. घृणा (Hate)
१०. अज्ञान (Ignorance)

क्या आप जानते हैं? (दशहरा रोचक तथ्य)

- **कुल्लू का दशहरा:** हिमाचल के कुल्लू में दशहरा उत्सव अन्य स्थानों पर समाप्त होने के बाद शुरू होता है, जहाँ 200 से अधिक स्थानीय देवी-देवता एकत्रित होते हैं।
- **मैसूर दशहरा:** कर्नाटक के मैसूर महल को एक लाख बल्बों से सजाया जाता है और 400 वर्ष पुरानी भव्य हाथी शोभा यात्रा निकाली जाती है।
- **शमी वृक्ष पूजन:** मान्यता है कि पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान अस्त्र-शस्त्र शमी वृक्ष में छुपाए थे।

रचना: कविता सिंह

चित्रकला कोना



"धर्म ही धनुष है, और सत्य ही अचूक बाण"

रचना: आदर्श शर्मा

स्वरचित कविता "सत्य की विजय"

अधर्म पर धर्म की यह विजय कहानी है,
हर हृदय में ज्ञान की जोत जगानी है।
सत्य का धनुष उठा, तू आज यह प्रतिज्ञा कर,
बुराई मिटाकर ही बनेगी नई ज़िंदगानी है।

रचना: खुशी सिंह



समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएँ।

धरोहर

गौरीशंकर मंदिर, गुलड़िया: सदियों पुरानी आस्था

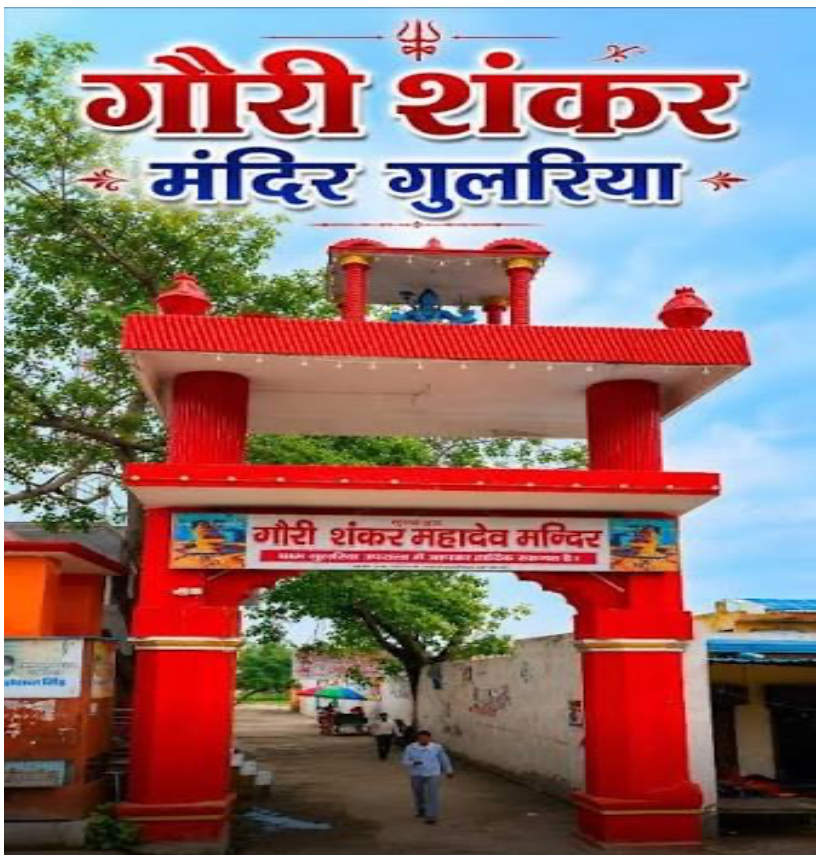

गौरीशंकर मंदिर, गुलड़िया

बरेली। बरेली की ऐतिहासिक धरोहरों में गुलड़िया का गौरीशंकर मंदिर अपनी अनूठी शिव प्रतिमा के कारण विशेष पहचान रखता है। आंवला तहसील के गुलड़िया उपराला गाँव में स्थित यह मंदिर धार्मिक आस्था, प्राचीन मूर्तिकला और स्थानीय सांस्कृतिक विरासत का सुंदर संगम है।

मंदिर का सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ स्थापित एकमुखी शिवलिंग है, जिस पर भगवान शिव के मुख के साथ माता गौरी का स्वरूप भी अंकित है। यह दुर्लभ कलाकृति इसे क्षेत्र के अन्य धार्मिक स्थलों से अलग पहचान देती है। विरासत संबंधी विवरण इसे गुप्तकालीन बताते हैं, जबकि एक प्रारंभिक शोध-अध्ययन इसकी शैली के आधार पर इसे कुषाण काल (पहली-तीसरी शताब्दी ईस्वी) से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करता है। हालाँकि, इसकी सटीक तिथि पर अभी निश्चित निष्कर्ष नहीं माना जाना चाहिए। स्थानीय मान्यताएँ इस मंदिर को अत्यंत प्राचीन परंपराओं से जोड़ती हैं। सावन और महाशिवरात्रि के अवसर पर यहाँ श्रद्धालुओं की विशेष भीड़ उमड़ती है। दूर-दराज़ से आने वाले भक्त जलाभिषेक और पूजा-अर्चना करते हैं, जिससे यह स्थान धार्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण केंद्र बनता है। गौरीशंकर मंदिर बरेली की ऐसी विरासत है, जहाँ आस्था के साथ प्राचीन भारतीय कला और इतिहास की झलक भी देखने को मिलती है। इसका संरक्षण आने वाली पीढ़ियों तक इस अनमोल धरोहर को पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण है।

"गौरीशंकर मंदिर बरेली की ऐसी विरासत है, जहाँ आस्था के साथ प्राचीन भारतीय कला और इतिहास की झलक भी देखने को मिलती है।"

शिवांग शर्मा, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025

शिक्षा की विरासत

बरेली कॉलेज: शिक्षा, इतिहास और गौरवशाली विरासत का प्रतीक



बरेली कॉलेज, बरेली

बरेली। बरेली कॉलेज, बरेली शहर की ऐतिहासिक और शैक्षिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी स्थापना 17 जुलाई 1837 को ब्रिटिश शासनकाल में एक सरकारी स्कूल के रूप में हुई थी, जिसमें शुरुआत में केवल 57 विद्यार्थी पढ़ते थे। वर्ष 1850 में इसे कॉलेज का दर्जा प्राप्त हुआ। इस संस्थान ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इसकी शैक्षिक गतिविधियाँ भी प्रभावित हुईं। वर्ष 1859 में इसे पुनः स्थापित किया गया। आर्थिक कठिनाइयों के कारण 1877 में यह फिर बंद हुआ, लेकिन जनसहयोग और पंडित छेदालाल के प्रयासों से 1884 में इसका संचालन दोबारा शुरू हुआ। कॉलेज के विकास में रामपुर के नवाब का योगदान भी उल्लेखनीय रहा, जिन्होंने संस्थान को 110 एकड़ भूमि दान में दी। यहाँ का ऐतिहासिक परिसर और वास्तुकला इसकी गौरवशाली विरासत की झलक प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान में बरेली कॉलेज, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय से संबद्ध एक प्रमुख शिक्षण संस्थान है। यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि और शिक्षा सहित विभिन्न विषयों में अध्ययन के अवसर उपलब्ध हैं।

"1837 में 57 विद्यार्थियों से शुरू हुआ यह सफर आज बरेली की शिक्षा, संघर्ष और सांस्कृतिक विरासत की एक गौरवशाली कहानी है।"

1837 में 57 विद्यार्थियों से शुरू हुआ यह सफर आज बरेली की शिक्षा, संघर्ष और सांस्कृतिक विरासत की एक गौरवशाली कहानी है।



प्रशिक्षुओं के कैमरे से – प्रकृति के रंग

प्रकृति







छायाचित्र: कविता सिंह, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025







छायाचित्र: मो. सादान, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025







छायाचित्र: कृतिका तिवारी, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2025

डिजिटल शिक्षण

टेक फॉर टीचर्स: क्विज़लेट (Quizlet) - आधुनिक शिक्षा का एक प्रभावी डिजिटल सेतु

आज के डिजिटल युग में शिक्षण (Teaching) के तरीके तेजी से बदल रहे हैं। शिक्षकों के काम को आसान, इंटरैक्टिव और प्रभावी बनाने के लिए Quizlet App एक बेहतरीन और बेहद लोकप्रिय टूल साबित हो रहा है। अगर आप अपने छात्रों की पढ़ाई को अधिक रोचक बनाना चाहते हैं, तो यह ऐप आपके लिए ही है।

क्या है Quizlet App?

Quizlet एक डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म है जो फ्लैशकार्ड (Flashcards), क्विज़ और विभिन्न इंटरैक्टिव गेम्स के माध्यम से छात्रों को कोई भी विषय आसानी से याद रखने में मदद करता है। इसके जरिए शिक्षक अपनी कक्षा के लिए कस्टम स्टडी सेट बना सकते हैं।

शिक्षकों के लिए क्यों फायदेमंद है Quizlet?

इंटरैक्टिव फ्लैशकार्ड्स (Interactive Flashcards): कठिन शब्दों, परिभाषाओं (Definitions) और सूत्रों (Formulas) को डिजिटल फ्लैशकार्ड में बदलकर छात्रों को आसानी से सिखाया जा सकता है।

क्विज़लेट लाइव (Quizlet Live): यह इस ऐप का सबसे बेहतरीन फीचर है। इसके जरिए आप कक्षा में ही छात्रों के बीच एक लाइव ग्रुप गेम या प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं, जिससे छात्रों में टीमवर्क और सीखने की ललक बढ़ती है।

समय की बचत: ऐप पर पहले से ही लाखों तैयार स्टडी सेट उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग शिक्षक सीधे अपनी कक्षा में कर सकते हैं।

प्रगति की ट्रैकिंग (Progress Tracking): शिक्षक यह आसानी से देख सकते हैं कि कौन-सा छात्र किस विषय में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और किसे अतिरिक्त मदद की जरूरत है।

इस वीडियो में आप क्या सीखेंगे?

हमारे इस विशेष वीडियो गाइड में शिक्षकों के लिए Quizlet का उपयोग करने का पूरा तरीका (Step-by-Step Guide) बताया गया है:

वीडियो देखने के लिए QR कोड स्कैन करें

1. Quizlet पर शिक्षक के रूप में अकाउंट कैसे बनाएं।
2. अपनी कक्षा के लिए पहला स्टडी सेट (Study Set) कैसे तैयार करें।
3. कक्षा के दौरान Quizlet Live गेम को कैसे सेटअप और रन करें।
4. छात्रों के साथ स्टडी लिंक साझा (Share) करने के आसान तरीके।

निष्कर्ष:

क्विज़लेट केवल एक ऐप नहीं है, बल्कि पारंपरिक ब्लैकबोर्ड शिक्षण को स्मार्ट कक्षा में बदलने का एक सशक्त माध्यम है। इस तकनीक को अपनाएं और अपने शिक्षण को और भी प्रभावी बनाएं।

-कृतिका एवं आदर्श शर्मा, प्रशिक्षु, डी एल एड २०26

प्रशिक्षुओं के कैमरे से

फोटोग्राफी



लोकगीत प्रस्तुति, राजस्थान



3D लाइट एंड साउंड शो, मंडोर गार्डन, जोधपुर, राजस्थान



महाराजा गज सिंह राठौर, मेहरानगढ़ फोर्ट, राजस्थान

नई खोजें • नवाचार • भविष्य की तकनीक

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम: विज्ञान, सपनों और आत्मनिर्भर भारत के प्रेरणास्रोत



चित्र स्रोत: गूगल

डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। वे भारत के प्रसिद्ध एयरोस्पेस वैज्ञानिक और 11वें राष्ट्रपति थे। उन्होंने अपना जीवन अंतरिक्ष अनुसंधान, रक्षा प्रौद्योगिकी, शिक्षा और युवाओं को प्रेरित करने के लिए समर्पित किया।

स्रोत/संदर्भ: भारत के राष्ट्रपति का आधिकारिक पोर्टल; भारत सरकार, प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB)।

डॉ. कलाम ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान SLV-III के विकास में परियोजना निदेशक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जुलाई 1980 में इसी प्रक्षेपण यान ने रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की निकट कक्षा में स्थापित किया।

बाद में उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (Integrated Guided Missile Development Programme–IGMDP) का नेतृत्व किया। अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलों के विकास एवं परिचालन क्षमता में उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण उन्हें 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' कहा जाता है।

स्रोत/संदर्भ: भारत के राष्ट्रपति का आधिकारिक पोर्टल; भारत सरकार, PIB की 28 जुलाई 2015 की विज्ञप्ति।

उन्हें 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' क्यों कहा जाता है?

मिसाइल मैन ऑफ इंडिया: भारत के स्वदेशी मिसाइल एवं रक्षा प्रौद्योगिकी कार्यक्रमोंः में उनके योगदान के कारण।

जनता के राष्ट्रपति (People's President): राष्ट्रपति के रूप में उनकी सरलता, जनसंपर्क और आम लोगों से जुड़ाव के कारण।

युवाओं के प्रेरणास्रोत: विद्यार्थियों को बड़े सपने देखने, ज्ञान प्राप्त करने और देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करने के कारण।

महान शिक्षक एवं वैज्ञानिक: विज्ञान, शिक्षा और ज्ञान को समाज के विकास का आधार मानने के कारण।

स्रोत/संदर्भ: भारत सरकार, PIB; भारत के राष्ट्रपति का आधिकारिक पोर्टल।

उनकी प्रमुख उपलब्धियाँ और सम्मान

डॉ. कलाम ने अंतरिक्ष एवं रक्षा अनुसंधान में योगदान देने के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य किया। उन्हें वर्ष 1981 में पद्म भूषण, 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उन्होंने 25 जुलाई 2002 से 25 जुलाई 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया।

"उन्हें वर्ष 1981 में पद्म भूषण, 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।"

15 अक्टूबर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयंती है। भारत में अनेक शैक्षणिक संस्थान इस दिन को विद्यार्थियों की शिक्षा, जिज्ञासा, रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने के लिए 'विश्व

विद्यार्थी दिवस' (World Students' Day) के रूप में मनाते हैं।

डॉ. कलाम ने 2002 में भारत के राष्ट्रपति का पद संभाला। वे विद्यार्थियों के साथ संवाद करना और उन्हें विज्ञान, नवाचार तथा राष्ट्र-निर्माण के लिए प्रेरित करना बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। 27 जुलाई 2015 को भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), शिलांग में विद्यार्थियों को व्याख्यान देते समय उनका निधन हो गया।

"सपने वे नहीं जो हम सोते समय देखते हैं, सपने वे हैं जो हमें सोने नहीं देते।"

– यह कथन डॉ. कलाम से लोकप्रिय रूप से जोड़ा जाता है।

प्रस्तुति: सुहानी, प्रशिक्षु, डी.एल.एड. 2026

इसरो • EOS-05

अंतरिक्ष से पृथ्वी पर नज़र



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने 4 सितंबर 2026 को GSLV-F17 रॉकेट की सहायता से EOS-05 पृथ्वी-अवलोकन उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया। उपग्रह को उसकी निर्धारित प्रारंभिक स्थानांतरण कक्षा (Sub-Geosynchronous Transfer Orbit–Sub-GTO) में स्थापित किया गया। ISRO के अनुसार, EOS-05 भू-तुल्यकालिक कक्षा से पृथ्वी की इमेजिंग करने वाला भारत का पहला उपग्रह है।

स्रोत/संदर्भ: ISRO, GSLV-F17/EOS-05 मिशन की आधिकारिक जानकारी।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

"पृथ्वी-अवलोकन उपग्रह धरती, भूमि, जल और पर्यावरण से संबंधित जानकारी एकत्र करने में मदद करते हैं।"

पृथ्वी-अवलोकन उपग्रह धरती, भूमि, जल और पर्यावरण से संबंधित जानकारी एकत्र करने में मदद करते हैं। इनसे प्राप्त आँकड़ों का उपयोग मानचित्रण, प्राकृतिक संसाधनों की निगरानी और आपदा प्रबंधन जैसी गतिविधियों में किया जा सकता है। उपग्रहों से प्राप्त चित्र बड़े क्षेत्रों का नियमित अवलोकन करने में उपयोगी होते हैं।

स्रोत/संदर्भ: ISRO; पृथ्वी-अवलोकन एवं रिमोट सेंसिंग के वैज्ञानिक अनुप्रयोग।

विज्ञान के पीछे के तथ्य

उपग्रहों पर लगे सेंसर पृथ्वी से परावर्तित सूर्य के प्रकाश या पृथ्वी द्वारा उत्सर्जित ऊर्जा को माप सकते हैं। अलग-अलग तरंगदैर्घ्यों (Wavelengths) से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करके वनस्पति, जल, बादलों और भूमि की स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है।

स्रोत/संदर्भ: ISRO; रिमोट सेंसिंग के वैज्ञानिक सिद्धांत

बुलेटिन टीम

मार्गदर्शन एवं संरक्षण

मुख्य संरक्षक
श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा
अपर मुख्य सचिव, वित्त, माध्यमिक शिक्षा एवं बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ

प्रेरणा
श्रीमती मोनिका रानी
महानिदेशक, स्कूल शिक्षा / राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मार्गदर्शन
श्री गणेश कुमार
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

प्रोत्साहन
डॉ. पवन कुमार
संयुक्त निदेशक (एस.एस.ए.), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ

निर्देशन
श्री राजेश कुमार
प्राचार्य, डायट फरीदपुर, बरेली

सह-निदेशन
श्रीमती दीप्ति वार्ष्णेय
उप प्राचार्य, डायट फरीदपुर, बरेली

सहयोग
श्री मनोज कुमार • श्री प्रेम सुख गंगवार • श्री सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट फरीदपुर, बरेली

संपादक एवं समन्वय
डॉ. फ़हमीना
प्रवक्ता, डायट फरीदपुर, बरेली

संपादकीय मंडल

श्री कृष्ण कुमार
प्रवक्ता

श्रीमती अर्चना
प्रवक्ता

श्री श्रीकान्त मिश्रा
प्रवक्ता

डॉ. रूबी
प्रवक्ता

श्रीमती वंदना सहाय
प्रवक्ता

प्रशिक्षु टीम

डी.एल.एड. प्रशिक्षु, डायट फरीदपुर, बरेली

समन्वयक एवं डिजिटल सपोर्ट


अरबाब रज़ा ख़ां


कविता सिंह

बुलेटिन टीम लीडर्स


मो. सादान


अनुज सिंह

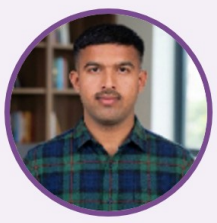
आदर्श शर्मा


शिवांग शर्मा


तरन्नुम


शिवम यादव


सुप्रीत शर्मा


अनू तोमर


कृतिका तिवारी


खुशी

अगले अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित – लेख, कविता, अनुभव, चित्र हर माह की 20 तारीख तक भेजें

ricdietbareilly@gmail.com